quality and have provided fiscal incentives on inputs for export production.

Defence Deals With U.K.

*57. SHRIMATI VEENA VERMA: SHRI SUSHIL KUMAR SAMBHAJIRAO SHINDE:

Will the Minister of DEFENCE be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the British Prime Minister during his recent visit to New Delhi held discussions with the Indian Prime Minister and other Govenment representatives on some defence deals including the proposal for supply of Hawk-training aircrafts; and

(b) if so, the details thereof and the outcome of the discussions?

THE MINISTER OF DEFENCE (SHRI SHARAD PAWAR): (a) and (b) There was no discussion on defence deals; however, the British Prime Minister referred to the British offer of the Hawk jet trainer. Our Prime Minister informed him that the offer was being technically evaluated.

Sick PSUS Referred to Bureau of Industrial and Financial Reconstruction

*58. SHRI VITHAL BHAI M. PATEL Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether it is a fact that a number of sick public sector undertakings cases have been referred to BIFR;

(b) whether Government have taken a final decision about the sick public undertaking which are not viable; if so, the details thereof; and

(c) the number of sick undertakings which would become viable after the implementation of the New Industrial Policy?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF INDUSTRY (DEPARTMENT OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT) WITH ADDITIONAL CHARGE OF THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF INDUSTRY (DEPARTMENT OF HEAVY INDUSTRY) (SMT. KRISHNA SAHI):

(a) Yes, Sir. As per the amended Sick Industrial Companies (Special Provisions) Act, 1985, 38 PSUs have registered themselves with BIFR. The reference to BIFR is mandatory.

(b) The definition of sickness is as per the SICA. Government does not decide the issue on a case to case basis, but on the basis of the balance-sheets of the PSUs. On the basis of 1991-92 balance sheets, fifty PSUs become referable to BIFR.

(c) Reference to sick PSUs to BIFR was an integral part of the new Industrial Policy. As yet, revival plans have not been finalised by the BIFR in any case and it is too premature to indicate as to how many sick PSUs will become viable.

देश में गैर-पारम्परिक स्रोतों से ऊर्जा प्राप्त करना

*59. **श्रीमती सुषमा स्वराज:**
डा० जिनेन्द्र कुमार जैन:

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि देश में गैर-पारम्परिक स्रोतों से ऊर्जा प्राप्त करने की पर्याप्त क्षमता है;

(ख) यदि हां, तो वर्ष 1990-91 के दौरान देश में गैर-पारम्परिक स्रोतों से ऊर्जा प्राप्त कर पाने की कितनी क्षमता थी;

(ग) क्या सरकार ने आठवीं पंचवर्षीय योजना अवधि के दौरान इस क्षमता का उपयोग करके ऊर्जा प्राप्त करने का कोई लक्ष्य निर्धारित किया है; और

(घ) यदि हां, तो निर्धारित लक्ष्य क्या है और इसे प्राप्त करने के लिए सरकार को अनुमानतः कुल कितनी धनराशि की आवश्यकता होगी और अभी तक किस-किस स्रोत से कितनी-कितनी राशि उपलब्ध होने का अनुमान है?

गैर-पारम्परिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय में राज्यमंत्री तथा कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री का अतिरिक्त प्रभार (श्री एस० कृष्ण कुमार): (क) और (ख) जी, हां। अपारम्परिक ऊर्जा स्रोतों से ऊर्जा उत्पादन की उल्लेखनीय अनुमानित क्षमता है। स्रोतवार क्षमता विवरण-1 में दी गई है (नीचे देखिये) इसका उपयोग तकनीकी आर्थिक व्यवहार्यता, लागत प्रभावकारिता, प्रयोक्ताओं की प्रतिक्रिया और स्वीकृति तथा संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर है। केन्द्रीय सरकार उपलब्ध क्षमता के अनुरूप विभिन्न कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए राज्य अभिकरणों के जरिए प्रयोक्ताओं/लाभभोगियों को वित्तीय समर्थन/प्रोत्साहन दे रही है। वर्ष 1990-91 के लिए 110.64 करोड़ रुपए के केन्द्रीय क्षेत्र के व्यय के अनुरूप वर्ष 1990-91 के लिए कार्यक्रमवार वास्तविक उपलब्धियां विवरण-2 में दी गई हैं। **(नीचे देखिये)**

(ग) और (घ) जी, हां। सरकार ने 857 करोड़ रुपए के केन्द्रीय क्षेत्र के परिव्यय को ध्यान में रखकर आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान अपारम्परिक ऊर्जा क्षमता के उपयोग द्वारा ऊर्जा के उत्पादन हेतु लक्ष्य तैयार किए हैं। आठवीं पंचवर्षीय योजना के लिए कार्यक्रमवार अनन्तिम वास्तविक लक्ष्य विवरण-3 में दिए गए हैं। **(नीचे देखिये)**

बजटीय समर्थन के अलावा, सरकार द्वारा विश्व बैंक और अन्य द्विपक्षीय अभिकरणों से संसाधन जुटाने के लिए प्रयास किए गए हैं। अक्षय संसाधन विकास परियोजना के लिए लघु जल-विद्युत, पवन ऊर्जा और सौर प्रकाशवोल्टीय में क्षमता के दोहन के लिए लगभग 145 मिलियन अमरीकी डालर की वचनबद्धता प्राप्त करना संभव हुआ है। विश्व बैंक (अंतर्राष्ट्रीय विकास अभिकरण), विश्वव्यापी पर्यावरण सुविधा (जी०ई०एफ०) और स्विटरजलैंड सरकार इस परियोजना के वित्त-पोषण में भाग ले रहे हैं। इसके अलावा, इस परियोजना के लिए डैनिश सरकार (डैनिडा) की सहायता भी विचाराधीन है। उपर्युक्त परियोजना के अंतर्गत प्राप्त होने वाली संभावित सहायता और भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था के जरिए गैर-सरकारी उद्यमियों को उधार दी जाने वाली राशि के जरिए प्रति 100 मे०वा० की कुल क्षमता की लघु जल-विद्युत परियोजनाओं के माध्यम से 85 मे०वा० पवन फार्मों के जरिए तथा 2.5 मे०वा० सौर प्रकाशवोल्टीय प्रणालियों के माध्यम से वृद्धि किए जाने की परिकल्पना की गई है।

इसके अलावा, नीदरलैंड सरकार ने लघु जल-विद्युत, पवन ऊर्जा, इत्यादि सहित प्रौद्योगिकियों के वित्त पोषण के प्रति कुल 17 मिलियन गिल्डर का सहायता अनुदान पहले ही दे दिया है। डच सरकार ने भी नए तथा अक्षय ऊर्जा स्रोत प्रौद्योगिकियों के लिए 23 मिलियन गिल्डर की अतिरिक्त वचनबद्धता की है।

विवरण 1

देश में विभिन्न प्रकार के अपारंपरिक तथा अक्षय ऊर्जा स्रोतों तथा प्रौद्योगिकियों की लगभग क्षमता

स्रोत/प्रौद्योगिकी	लगभग क्षमता	उपलब्धता	अभ्युक्ति
बायोगैस संयंत्र	12 मिलियन (संख्या) लगभग 15 वर्षों में प्राप्य		लकड़ी की प्रत्याशित बचत : 37.44 मिलियन टन प्रतिवर्ष के बराबर खाद की प्रत्याशित प्राप्ति : 180 मिलियन टन प्रति वर्ष के बराबर
बायोमास	17000 मे०वा०		बराबर
व्रत चूल्हा	120 मिलियन (संख्या)		लकड़ी की प्रत्याशित बचत : 84 मिलियन टन प्रतिवर्ष लकड़ी/लकड़ी के बराबर
मिनी-माइक्रो जल-विद्युत	5,000 मे०वा०		कुल क्षमता
भारत में कुल सौर ऊर्जा आतपन		5×10^{15} किलोवाट आवर प्रतिवर्ष	बराबर

विवरण-2

विभिन्न अपारम्परिक ऊर्जा कार्यक्रमों के संबंध में वर्ष 1990-91 के लिए कार्यक्रमवार वास्तविक उपलब्धियां

क्रम सं०	कार्यक्रम	यूनिट	उपलब्धि 1990-91
1.	राष्ट्रीय बायोगैस विकास परियोजना (पारिवारिक आकार के बायोगैस संयंत्र)	लाखों में संख्या	1.65
2.	सामुदायिक, संस्थागत बायोगैस संयंत्र	संख्या	112
3.	राष्ट्रीय उन्नत चूल्हा कार्यक्रम	लाखों में संख्या	19.87
4.	सौर तापीय ऊर्जा		
	(क) प्रणालियां	संग्राहक क्षेत्र वर्गमीटर में ('000 में) संख्या	33
	(ख) सौर कुकर	संख्या '000 में	27
5.	सौर प्रकाशवोल्टीय		
	(क) जिन गावों को सड़क रोशनी दी जानी है	संख्या	708
	(ख) जल पम्प	संख्या	56
	(ग) प्रकाशवोल्टीय विद्युत यूनिट	किलोवाट पावर	90.21
	(घ) सामुदायिक प्रकाश/टी०वी० और सामुदायिक सुविधाएं	संख्या	100
	(ड) घरेलू प्रकाश यूनिटें	संख्या	2600
6.	पवन ऊर्जा		
	(क) पवन पम्प	संख्या	171
	(ख) पवन फार्म	मे०वा०	10.2
7.	ऊर्जा ग्राम		
	(क) ऊर्जा सर्वेक्षण	संख्या	148
	(ख) परियोजनाएं	संख्या	19
8.	बायोमास कार्यक्रम		
	(क) ऊर्जा पौधारोपण	हैक्टेयर	756
	(ख) गैसीफायर	मे०वा०	0.80

विवरण-3

अपारंपरिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय के विभिन्न अपारंपरिक ऊर्जा कार्यक्रमों के संबंध में आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992-97) के लिए कार्यक्रमवार अनन्तिम वास्तविक लक्ष्य तथा उपलब्धियां

क्रम सं०	कार्यक्रम	परिव्यय (करोड़ रुपयों में)	अनन्तिम वास्तविक लक्ष्य
1	2	3	4
1.	बायोगैस विकास कार्यक्रम	320.00	
	(क) पारिवारिक आकार के बायोगैस संयंत्र		7.50 लाख संख्या
	(ख) सामुदायिक बायोगैस संयंत्र/संस्थागत बायोगैस संयंत्र/विष्ठा आधारित बायोगैस संयंत्र		450 संख्या
2.	उन्नत चूल्हा कार्यक्रम	80.00	100 लाख संख्या
3.	सौर तापीय कार्यक्रम	80.00	
	(क) सौर तापीय ऊर्जा प्रणालियां		2.75 लाख वर्गमीटर संग्राहक क्षेत्र
	(ख) सौर कुकर		3.00 लाख संख्या
4.	सौर प्रकाशवोल्टीय कार्यक्रम	90.00	
	(क) प्रकाशवोल्टीय प्रकाश प्रणालियां		25,000 संख्या

1	2	3	4
	(ख) प्रकाशवोल्टीय जल पम्प		600 संख्या
	(ग) अन्य प्रकाशवोल्टीय प्रणालियां		1720 किलोवाट
5.	पवन ऊर्जा कार्यक्रम	90.00	
	(क) पवन पम्प		4000 संख्या
	(ख) पवन बैटरी चार्जर		500 संख्या
	(ग) पवन विद्युत		100 मे० वा०*
6.	ऊर्जा ग्राम (सर्वेक्षण)	1.00	
7.	बायोमास विकास कार्यक्रम	15.00@	
8.	मानव और पशु ऊर्जा कार्यक्रम	1.00	
9.	बायोऊर्जा विकास कार्यक्रम	20.00	300 मे०वा०*
10.	लघु जलविद्युत विकास कार्यक्रम	100.00	200 मे०वा०*
11.	भूतल परिवहन के लिए वैकल्पिक ईंधन	10.00	
12.	मैग्नेटो हाइड्रो डाइनेमिक्स		
13.	भूतापीय ऊर्जा		
14.	ऊर्जा के रासायनिक स्रोत	10.00	
15.	सामुद्रिक ऊर्जा		
16.	हाइड्रोजन ऊर्जा		
17.	भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लि०	10.00	
18.	क्षेत्रीय कार्यालय, इत्यादि		
19.	सूचना तथा प्रचार		
20.	सेमिनार/सम्मेलन	10.00	
21.	अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग		
22.	डेटा बैंक/टी०आई०एफ०ए०सी०		
23.	सौर ऊर्जा केन्द्र	15.00	
24.	विशेष क्षेत्र कार्यक्रम तथा प्रदर्शन गतिविधियां	5.00	
	कुल	857.00	

@ इसमें गैसी फायर शामिल है।

* इसमें गैर-सरकारी क्षेत्र शामिल है।

Profits of Drug Companies

*60. SHRIMATI SATYA BAHIN:
SHRI RAJNI RANJAN SAHU:

Will the PRIME MINISTER be pleased to refer to the answer to starred question 147 given in Rajya Sabha on 3.12.92 and state:

(a) what are the names of the companies whose profitability has increased in 1990-91 and 1991-92 as compared to the previous two years, and what is the percentage of increase;

(b) what is the investment made by each of these companies in the field of drugs during the above period;

(c) whether it is a fact that profits have not been ploughed back by these companies instead they have been supressed and siphoned off by creating small scale units, or companies for distribution and procurement of materials and also by credit notes and cash acceptances by the suppliers;

(d) what are the names of companies which have created such units and companies for distribution; and

(e) what are the basis on which initiation has been taken to change policy without study of those aspects?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF CHEMICALS AND FERTILIZERS (SHRI EDUARDO FALEIRO): (a) To the extent information is available, profit before tax as a percentage of sales turn over of